CBSE Class 07 Hindi
NCERT Solutions
पाठ-14 खानपान की बदलती तस्वीर

1. खानपान की मिश्रित संस्कृति से लेखक का क्या मतलब है? अपने घर के उदाहरण देकर इसकी व्याख्या करें।

उत्तर:- खानपान की मिश्रित संस्कृति से लेखक का तात्पर्य सभी प्रदेशों के खान-पान के मिश्रित रूप से है। यहाँ पर लेखक यह कहना चाहते हैं कि आज एक ही घर में हमें कई प्रान्तों के खाने देखने के लिए मिल जाते हैं। लोगों ने उद्योग धंधों, नौकरियों व तबादलों के कारण व अपनी पसंद के आधार पर एक दूसरे के प्रांत की खाने की चीज़ों को अपने भोज्य पदार्थों में शामिल किया है। मेरा घर कोलकत्ता में है। मैं बंगाली परिवार से हूँ। हमारा मुख्य भोजन चावल और मछली है, लेकिन हमारे घर में चावल और मछली के अलावा दक्षिण भारतीय व्यंजन इडली, सांभर, डोसा आदि और पाश्चात्य भोजन बर्गर व नूडल्स भी पसंद किए जाते हैं। यहाँ तक कि हम इन्हें बाज़ार से न लाकर अपने ही घर में बनाते हैं।

2. खानपान में बदलाव के कौन से फ़ायदे हैं? फिर लेखक इस बदलाव को लेकर चिंतित क्यों है?

उत्तर:- खानपान में बदलाव से निम्न फायदे हैं -

1.भिन्न प्रदेशों की संस्कृतियों को जानने और समझने का मौका मिल जाता है।
2. राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।
3. अलग-अलग प्रकार के भोज्य पदार्थ खाने में मिलने के कारण खाने में रूचि बने रहती है।
4. देश-विदेश के व्यंजनों,खानपान के बारे में पता चलता है।
5. गृहिणियों व कामकाजी महिलाओं को जल्दी तैयार होनेवाले विविध व्यंजनों की विधियाँ उपलब्ध होती है।
6. स्वाद, स्वास्थ्य व सरसता के आधार पर भोजन का चयन कर सकते हैं।
7. समय की बचत होती है।

खानपान में बदलाव आने से होनेवाले फायदों के बावजूद लेखक इस बदलाव को लेकर चिंतित है क्योंकि उसका मानना है कि आज खानपान की मिश्रित संस्कृति को अपनाने से नुकसान भी हो रहे हैं जो निम्न रूप से हैं -

1. स्थानीय व्यंजनों का चलन कम होता जा रहा है जिससे नई पीढ़ी स्थानीय व्यंजनों के बारे में जानती ही नहीं है।
2. खाद्य पदार्थों में शुद्धता की कमी होती जा रही है।
3. कुछ व्यंजनों का स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित नहीं है,पौष्टिक तत्वों का अभाव होता है।

3. खानपान के मामले में स्थानीयता का क्या अर्थ है?

उत्तर:- खानपान के मामले में स्थानीयता का अर्थ है कि वे व्यंजन जो स्थानीय पसन्द एवं उपलब्ध साधनों के आधार पर बनते थे। जैसे मुम्बई की पाव-भाजी, दिल्ली के छोले-कुलचे, मथुरा के पेड़े व आगरे के पेठे-नमकीन तो कहीं किसी प्रदेश की जलेबियाँ, पूड़ी और कचौड़ी आदि स्थानीय व्यंजनों का अत्यधिक चलन था और अपना अलग महत्त्व भी था। खानपान की मिश्रित संस्कृति के आने के कारण अब लोगों को खाने-पीने के व्यंजनों में इतने विकल्प मिल गए हैं कि अब स्थानीय व्यंजनों का प्रचलन धीरे-धीरे कम

होता जा रहा है।

4. घर में बातचीत करके पता कीजिए कि आपके घर में क्या चीज़ें पकती हैं और क्या चीज़ें बनी-बनाई बाज़ार से आती हैं? इनमें से बाज़ार से आनेवाली कौन सी चीज़ें आपके माँ-पिता जी के बचपन में घर में बनती थीं?

घर में बननेवाली	बाज़ार से आनेवाली	माता-पिता के घर बचपन में बननेवाली

उत्तर:

घर में बननेवाली चीजें	बाज़ार से आने वाली	माता-पिता के घर बचपन में बनने वाली
भात	समोसा	समोसे
दाल	कचौड़ी	कचौड़ी
सब्जियाँ	जलेबियाँ	जलेबियाँ
पूरी, रोटी, पराठे	नूडल्स,	मीठे व्यंजन-हलवा,बर्फी,पेड़े

5. यहाँ खाने, पकाने और स्वाद से संबंधित कुछ शब्द दिए गए हैं। इन्हें ध्यान से देखिए और इनका वर्गीकरण कीजिए -
उबालना, तलना, भूनना, सेंकना, दाल, भात, रोटी, पापड़, आलू, बैंगन, खट्टा, मीठा, तीखा, नमकीन, कसैला।

भोजन	कैसे पकाया	स्वाद

उत्तर:

भोजन	**कैसे पकाया**	**स्वाद**
दाल	उबालना	नमकीन
भात	उबालना	मीठा
रोटी	सेंकना	मीठा
पापड़	सेंकना	नमकीन
आलू	उबालना	मीठा
बैंगन	भूनना	कसैला

• भाषा की बात

6. खानपान शब्द, खान और पान दो शब्दों को जोड़कर बना है। खानपान शब्द में और छिपा हुआ है। जिन शब्दों के योग में और, अथवा, या जैसे योजक शब्द छिपे हों, उन्हें द्वंद्व समास कहते हैं। नीचे द्वंद्व समास के कुछ उदाहरण दिए गए हैं। इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए और अर्थ समझिए -
सीना-पिरोना, भला-बुरा, चलना-फिरना, लंबा-चौड़ा, कहा-सुनी, घास-फूस।

उत्तर:

शब्द	वाक्य
सीना-पिरोना	आजकल सीना-पिरोना सभी को आना चाहिए।
भला-बुरा	तुमने कमल को कल बहुत भला-बुरा कह दिया।
चलना-फिरना	वृद्ध होने के कारण नानाजी का चलना-फिरना कम हो गया है।
लंबा-चौड़ा	इतना लंबा-चौड़ा बिजली का बिल देखकर मैं हैरान रह गई।
कहा-सुनी	घर में रोज-रोज की कहा-सुनी अच्छी बात नहीं है।
घास-फूस	गाँव के घरों की छत घास-फूस की होती है।

Material downloaded from myCBSEguide.com.